संगम काल (100-300AD): राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं धर्म

भाग:-5

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

पाण्ड्य राजवंश (Pandya dynasty)

पांड्य राज्य दक्षिणी प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण और दक्षिण पूर्वी भाग में था| इसकी राजधानी मदुरै थी| इन का प्रतीक चिन्ह कान (एक प्रकार का मछली) थी| मेगास्थनीज ने ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में पाण्ड्य राज्य का उल्लेख मोतियों के देश के रूप में किया है| पाण्ड्य राजवंश के प्रथम प्रसिद्ध शासकों में नेडियोन था| इसने पहरुली नामक नदी को अस्तित्व प्रदान किया तथा समुद्र पूजा भी प्रारंभ कराई|

नेडियोन के बाद पल्शालइ मुदुकुडूमी शासक हुआ| वेलविकूडी दानपत्र के अनुसार यह पाण्ड्य राजवंश का ऐतिहासिक राजा था| इसने विजित राज्यों के प्रति कठोर नीति अपनाया| इसने वैदिक यज्ञ किए तथा पलशाले और महेश्वर की उपाधि धारण की|

पाण्ड्य राजवंश में सबसे विख्यात नेदुंजेलिमन था| उसकी प्रसिद्धि तलैयालगानम के युद्ध में विजय के परिणाम स्वरूप हुई| उसने 210 ई. तक राज्य किया| वह कवियों का संरक्षक था| वह वाणिज्य व व्यापार पर विशेष ध्यान देता था| इसने रोमन सम्राट आगस्टस के दरबार में दूत भी भेजा| नेदुंजेलिमन के बाद पाण्ड्य राज्य कमजोर होने लगा| संगम ग्रंथ में नाल्लिक्कोडम को अंतिम पाण्ड्य शासक माना गया है|